"व्रण" प्रकरण

 WOUNDS AND ULCERS

⊕ **व्रण निरुक्ति ⇒** व्रण शब्द "वृण या वृ-वृणोति, वृणुते" धातु से बना है। इसका अर्थ है- भक्षण करना (To consume), फैलना तथा चयन करना (To Choose)

⊕ **व्रण व्याख्या ⇒** आचार्य सुश्रुत ने व्रण को "व्रण-गात्रविचूर्णनि" कहा है। इसका अर्थ होता है- शरीर का विचूर्णित होना अर्थात् ऊतिनाश (Tissue Destruction) होना।

✡ "व्रणयति, गात्रं विवर्णयति, आच्छादयति इति व्रणः।" (डल्हण)

अर्थात् आचार्य डल्हण ने व्रण को धातुनाश तथा विवर्णता (Discolouration) करने वाला और धातुओं को आच्छादित करने वाला कहा है।

✡ "वृणोति यस्माद्रूढेऽपि व्रणवस्तु न नश्यति।
आदेह धारणात्तस्माद् व्रण इत्युच्यते बुधैः॥" (सु॰सू॰ 21/40)

अर्थात् आचार्य सुश्रुत ने व्रण को एक ऐसी क्रिया माना है जो कि शारीरिक धातुओं का भक्षण करती है, तथा इसके रोपण होने के पश्चात् व्रणवस्तु (Scar) नामक चिह्न शेष रह जाता है जो कि आजीवन बना रहता है।

✡ आधुनिक मतानुसार व्रण को शारीर या क्रियाशारीर (Anatomy or Physiology) की दृष्टि से ऊतीयक्रम का विच्छेद (Tissue Discontinuity) कह सकते हैं।

Scanned with CamScanner

व्रण का सारांश ⇒ आचार्य सुश्रुत ने व्रण का सारांश वर्णित करते हुये बताया है -

" षण्मूलोऽष्टपरिग्राही पञ्चलक्षण लक्षितः।
षष्ट्या विधानैर्निर्दिष्टैश्चतुर्भिः साध्यते व्रणः॥" (सु॰ चि॰ 1/34)

अर्थात व्रण के (6) मूल, (8) परिग्रह (अधिष्ठान) एवं (5) प्रकार के लक्षण होते हैं। जिसकी (60) चिकित्साउपक्रम एवं (4) पाद अर्थात चिकित्सा चतुष्पाद द्वारा उपचार किया जाता है।

व्रण

मूल (6)	अधिष्ठान (8)	लक्षण (5)	विधान (उपक्रम) (60)	चतुष्पाद (4)
वातज	त्वक्	गंध	षष्टि उपक्रम	वैद्य
पित्तज	माँस	वर्ण		रोगी
कफज	सिरा	स्त्राव		परिचारक
सन्निपातज	स्नायु	वेदना		औषध
रक्तज	अस्थि	आकृति		
आगन्तुज	संधि			
	कोष्ठ			
	मर्म			

व्रण सारांश ⇒ आचार्य चरक के अनुसार ⇒

- व्रण के प्रकार - (2)
- व्रण के भेद - (20)

Scanned with CamScanner

Date __/__/____ Page No.: _____

* व्रण के स्त्राव = (14)
* व्रण गंध = (8)
* दुष्ट व्रण = (12)
* व्रण दोष = (24)
* व्रण के उपद्रव = (16)
* व्रणोपक्रम = (36)

व्रण के अधिष्ठान ⇒ आचार्य चरक के अनुसार → (8)

(1) त्वचा (2) मांस (3) सिरा (4) स्नायु
(5) अस्थि (6) मेद (7) कोष्ठ (8) मर्म

व्रण की स्थानीय परीक्षा ⇒ व्रण की स्थानीय परीक्षा 5 प्रकारों (लक्षणो) के द्वारा की जाती है

(1) आकृति ⇒

(i) साध्य व्रण की आकृति ⇒ आयत, चतुष्क, वृत्त एवं त्रिपुट आकृति के व्रण साध्य होते हैं।

(ii) कृच्छ्र साध्य व्रण की आकृति ⇒ वक्र, अर्धचन्द्र, स्वस्तिक, माला, हवन, भाला, घोड़ा, बैल हाथी तथा रथ के समान अर्थात् उपरोक्त वर्णित साध्य व्रण आकृतियों से भिन्न।

"Words which do not give the light of Christ increase the darkness."—Mother Teresa

Scanned with CamScanner

☆ <u>आधुनिक मतानुसार</u> ⇒ कृच्छ्र साध्य व्रणों की आकृतियाँ निम्न हैं।

(i) क्षयज व्रण (Tubercular Ulcer) ⇒ अण्डाकार Oval Shap

(ii) अपस्फीत व्रण (Vericose Ulcer) ⇒ ऊर्ध्व दिशा में अण्डाकार (Vertically oval Shap)

(iii) मन्दरोगी व्रण (Rodent Ulcer) ⇒ उत्सेधयुक्त (Raised)

(iv) कैंसर का व्रण (Cancer) ⇒ विषम (Irregular)

(2) <u>गंध</u> ⇒ (8) - (चरकानुसार)

(A) "सर्पिस्तैलवसापूयरक्तश्यावाम्लपूतिकः।
व्रणानां व्रणगन्धज्ञैरष्टौ गन्धाः प्रकीर्तिताः॥" (च०चि०25)

(1) सर्पि (घृत) के समान (2) तैल के समान

(3) वसा के समान (4) पूय के समान

(5) श्याव गंध (धूम्रगंध) (6) अम्ल के समान

(6) रुधिर के समान (8) पूति गंध

(B) <u>दोषानुसार व्रण गंध</u> ⇒ (सुश्रुतानुसार)

(1) वातज व्रण ⇒ कटु गंध

Scanned with CamScanner

Date __/__/____ Page No.: _____

(3) कफज व्रण ⇒ विस्त्र गंध

(4) रक्तज व्रण ⇒ लोह गंध (रुधिर गंधी)

(5) सन्निपातज व्रण ⇒ कटु, तीक्ष्ण, विस्त्र एवं रुधिर की मिश्रित-गंध

(6) वात-पित्तज व्रण ⇒ लाजा सदृश्य

(7) वात-कफज व्रण ⇒ अतसी सदृश्य

(8) पित्त-कफज व्रण ⇒ तैल सदृश्य

(C) अरिष्ट सूचक व्रण गंध ⇒ व्रण की प्राकृतिक गंध (दोषज गंध) के अतिरिक्त अन्य व्रण गंध अरिष्ट सूचक होती हैं। यथा-

मांस, अगरु, घृत, जाती, कमल, चन्दन, चम्पा तथा दिव्य गन्ध जैसे- फलों के समान गंध इत्यादि सभी अरिष्ट सूचक गंध हैं।

इसके अतिरिक्त कुत्ता, कौवा, चूहा, घोड़ा, कीचड़, खटमल के समान गन्ध भी अरिष्टसूचक होती हैं।

(3) व्रण स्त्राव ⇒ (14) (चरकानुसार)

(A) "लसिकाजलपूयासृक हारिद्रारुणपिंजराः।
कषायनील हरितस्निग्ध रुक्षसितासिताः॥" (च॰चि 25)

आचार्य चरक ने निम्न 14 प्रकार के व्रणस्त्राव बताये हैं।

"Anger is never without an argument, but seldom with a good one." –Indira Gandhi

Scanned with CamScanner

Date __/__/__ Page No.: ____

व्रणस्त्राव ⇒

(1) लसिकास्त्राव (2) जलस्त्राव (3) पूयस्त्राव

(4) रक्तस्त्राव (5) हारिद्रासदृश्य स्त्राव (6) अरुणवर्णकास्त्राव

(7) पिंगलवर्णकास्त्राव (8) कषाय स्त्राव (9) नीलस्त्राव

(10) हरा स्त्राव (11) स्निग्ध स्त्राव (12) रूक्षस्त्राव

(13) श्वेतस्त्राव (14) असित (कृष्ण) स्त्राव

(B) स्थानानुसार व्रण स्त्राव ⇒ आघातज व्रणों में (सुश्रुतानुसार)

(1) त्वचा में ⇒ सलिल प्रकाश (जलसदृश्य), पीतवर्णीस्त्राव

(2) मांस में ⇒ सर्पिप्रकाश (घृतसदृश्य), श्वेतवर्णीस्त्राव

(3) सिरा में ⇒ (i) सद्यः छिन्न = रक्त अति प्रवृत्ति
(ii) कालान्तर में = औस सदृश्य स्त्राव

(4) स्नायु में ⇒ सिंघाणकप्रतिमम् (सिंघाणक सदृश्य स्त्राव)

(5) अस्थि में ⇒ निःसार शुक्तिधौत भवति (मज्जा मिश्रित एवं स्निग्ध एवं शुक्तिधौत सदृश्य)

(6) संधि में ⇒ पिच्छिल, झागदार रक्त मिश्रित, मथित पूय के सदृश्य एवं आकुंचन पर चासनी सदृश्य स्त्राव

(7) कोष्ठ में ⇒ स्थानानुसार - मूत्र, पुरीष, पूय या जल या रक्त की प्रवृत्ति तथा क्लेदयुक्त स्त्राव

Scanned with CamScanner

Date __/__/____ Page No.: _____

(c) दोषानुसार व्रणस्त्राव ⇒

(1) वातज व्रण में ⇒ इसमें व्रण स्त्राव काला, ओस, दधि, मस्तु, क्षारोदक, मांसधोवन या पुलकोदक के समान होता है।

(2) पित्तज व्रण में ⇒ इसमें व्रणस्त्राव, गोमेद, गोमूत्र, शंखभस्म, क्षारोदक या मधुर या पुलकोदक के समान होता है।

(3) कफज व्रण में ⇒ इसमें व्रणस्त्राव मक्खन, मज्जा, कासीस, तिलपिष्ट, नारियलजल या सूअर की वसा के समान होता है।

(4) सन्निपातज व्रण में ⇒ इसमें व्रण स्त्राव नारियलजल के समान, कांजी के स्वच्छ जल के समान, प्रियंगुफल के समान, यकृत के समान या मूँगकेयूष के समान होता है।

दोषानुसार व्रण वर्ण ⇒

(1) वातिक व्रण ⇒ भस्मकपोतास्थि वर्णी व्रण

(2) पैत्तिक व रक्तज व्रण ⇒ नील, पीत, हरित, श्याव, कृष्ण, रक्त, कपिल, पिंगल वर्ण

(3) कफज व्रण ⇒ श्वेत, स्निग्ध एवं पाण्डु वर्ण

(4) सन्निपातज व्रण ⇒ सब दोषों के मिश्रित वर्ण

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

❀ आधुनिक मतानुसार कुछ प्रमुख व्रण स्त्राव ⇒

(1) Serous discharge ⇒ Healing Ulcer

(2) Purulent discharge ⇒ Spreading Ulcer

(3) Bloody discharge ⇒ Malignant Ulcer

(4) Bony spicules discharge ⇒ Osteomyelitis

(5) Greenish discharge ⇒ Pseudomonas infection

❀ असाध्य व्रणस्त्राव ⇒

(1) पक्वाशय ⇒ पुलकोदक के समान

(2) रक्ताशय ⇒ क्षारोदक के समान

(3) आमाशय व त्रिक संधि ⇒ कलाय (मटर) के यूष के समान

❀ व्रण वेदना ⇒ दोषानुसार

(1) वातिक व्रण में ⇒ तोद (सुई चुभनवत), भेदनवत, ताड़नवत, आयमन (खिंचावट), मन्थन, निर्वापन, स्फोटन, विदारण, कम्पन, स्तम्भन, स्वपन (सुप्ति) इत्यादि अनेक वेदनाएं।

(2) पैत्तिक व्रण में ⇒ ओष, चोष, दाह, जलन, धूमायन, ऊष्णता एवं क्षार लगने के समान।

(3) कफज व्रण में ⇒ कण्डू, सुप्तता, अल्प वेदना, भारीपन, जड़ता एवं स्तम्भता इत्यादि

(4) सन्निपातज व्रण में ⇒ सभी दोषों से मिश्रित वेदनाएं।

To succeed in your mission, you must have single-minded devotion to your goal. — A.P. J. Abdul Kalam

Scanned with CamScanner